आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2009–2011

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : नौंवा अंक : आठवां दिसम्बर–2011

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in, Website : www.ajaibbani.org

5 महत्वपूर्ण संदेश

17 सच्चा शिष्य

29 सवाल-जवाब

34 धन्य अजायब

संपादक - प्रेम प्रकाश छाबड़ा मो. 099 50 55 66 71 (राजस्थान) मो. 098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उपसंपादक - नन्दनी

विशेष सलाहकार - गुरमेल सिंह नौरिया मो. 099 28 92 53 04

संपादकीय सहयोगी - मास्टर प्रताप सिंह, रेनू सचदेवा व परमजीत सिंह

मुज्य पृष्ठ सज्जा - प्रथम सरधारा

सन्त बानी आश्रम - 16 पी.एस., वाया- मुकलावा, तहसील - रायसिंहनगर - 335 039, जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्रीगंगानगर –335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

प्रकाशन दिनांक 1 दिसम्बर 2011 – 117 – **मूल्य – पाँच रुपये**

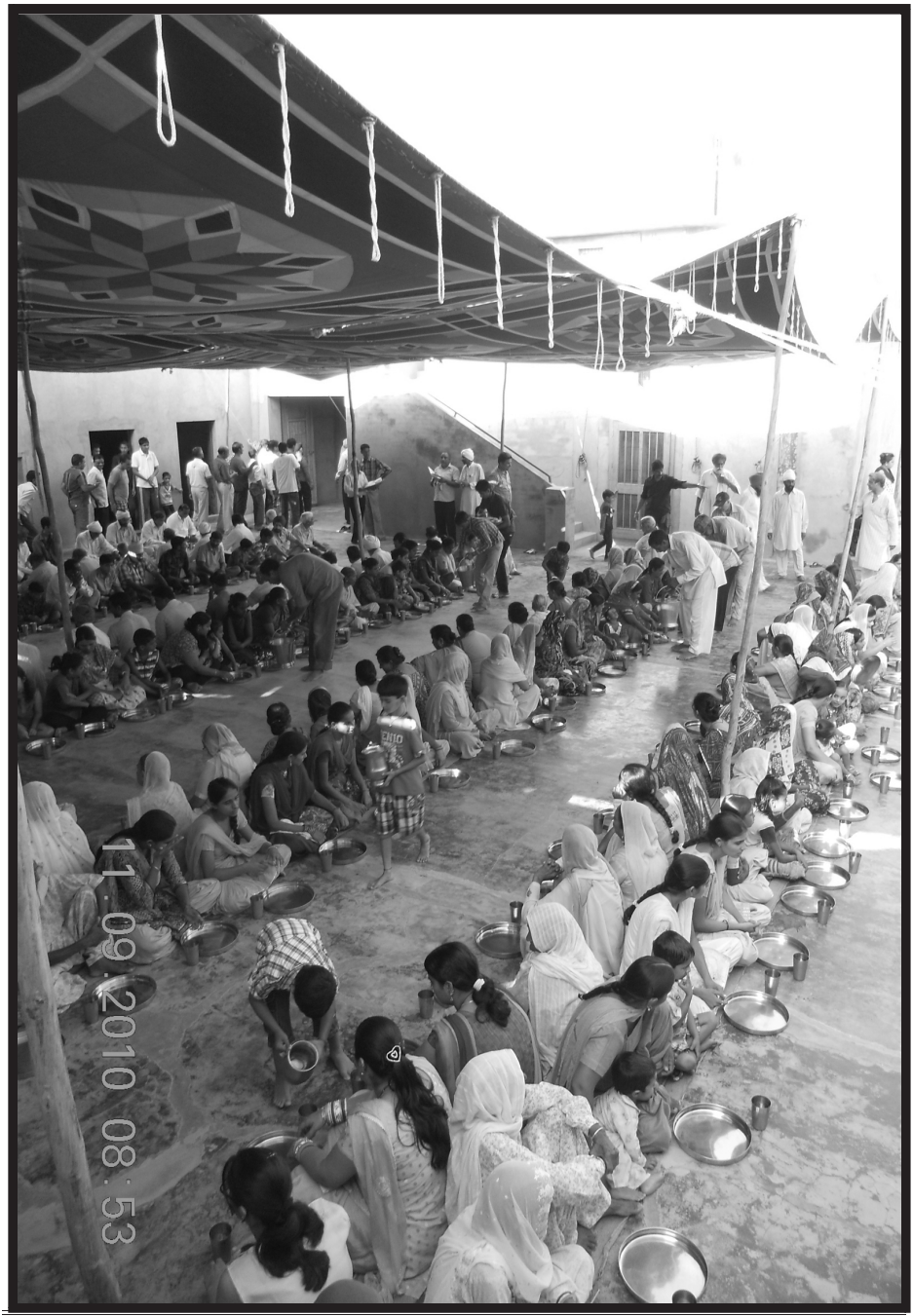
11.09.2010 08:53

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा

महत्त्वपूर्ण संदेश

16 पी. एस. आश्रम, राजस्थान

हम जो यह चलती-फिरती दुनियां देख रहे हैं यह अपने आप नहीं बनी, इस रचना के पीछे जरूर कोई ताकत काम कर रही है। कोई इसे कुदरत तो कोई इसे परमात्मा कहता है। जिनके दिल में तड़प और विरह उठती है कि हम इस रचना को पैदा करने वाले को देखें! वे बचपन से ही दुनियां का सहारा छोड़ देते हैं।

मैं सतसंग में कई बार आपको अपने बचपन की बातें सुनाया करता हूँ। मुझे अच्छी तरह याद है उस समय मेरी उम्र पाँच-छह साल थी। मैं अकेला ही खेल रहा था क्योंकि मुझे आम बच्चों के साथ खेलने की आदत नहीं थी। मेरे अंदर ख्याल उठा कि मंदिरो गुरुद्वारों में परमात्मा की चर्चा है। इंसान क्यों मरता है, मरकर कहाँ चला जाता है? इसके अंदर कौन सी चीज है जिसके निकल जाने पर यह बोल नहीं सकता कोई हरकत नहीं कर सकता?

मैंने भोलेपन में सारे परिवार के नाम पर मिट्टी की कुछ ढ़ेरियां बना ली और एक-एक ढ़ेरी से सवाल किया क्या मौत के भयानक समय में मुझे रख सकते हो? लेकिन न का जवाब मिला अगर हमारे होश-हवास ठीक हैं तो अंदर से सही आवाज आती है अगर हमारे होश-हवास ठीक नहीं तो हम अंदर से आने वाली आवाज़ को सुन ही नहीं सकते।

मेरे पिता जी चारपाई पर बैठकर देख रहे थे कि यह क्या कर रहा है। जब ढ़ेरी से न का जवाब आता तो मैं वह ढ़ेरी गिरा देता था लेकिन एक ऐसी ढ़ेरी बच गई जो परिवार में किसी के नाम से नहीं थी। मैंने उस ढ़ेरी पर माथा टेककर सवाल किया कि मैंने तुझे देखा

नहीं दुनियां से सुनते हैं कि कोई परमात्मा है। परमात्मा दुःखों और मुसीबतों से बचाता है। हे परमात्मा! क्या तू मुझे मिलेगा। मैं अपने अंदर ऐसे ही ख्याल कर रहा था जैसे शेखचिल्ली अपने दिल के अंदर कहानी करता था।

पिता जी ने सोचा कि इसने ढ़ेरियां क्यों बनाई और फिर क्यों गिरा दी? जब उन्होंने मुझसे पूछा तो मैंने उन्हें अपनी हकीकत बताई कि मैंने परिवार के सब सदस्यों की ढ़ेरियां बनाकर उनसे सवाल किए थे। यह एक ढ़ेरी वह है जिसको मैंने देखा नहीं। यह तड़प बचपन से बढ़ती ही चली गई।

जिनके अंदर सच्ची तड़प होती है उन पर गरीबी-अमीरी का असर नहीं होता। शाह बल्ख बुखारा अमीर घर में पैदा हुआ। उसके अंदर परमात्मा से मिलने का शौक, विरह और तड़प थी। इतिहास में आता है कि बल्ख बुखारा के सोने के लिए फूलों की सेज सजाई जाती थी। एक दिन फूलों की सेज सजाने के बाद नौकरानी के दिल में ख्याल आया कि बादशाह इस सेज पर बहुत आनन्द लेता होगा! मैं भी थोड़ी देर इस सेज पर सोकर देखूं तो सही। वह दिन की थकी हुई थी सेज पर लेटते ही फूलों की खुशबू चढ़ी तो उसे नींद आ गई, होश नहीं रहा कि मैं कहाँ पड़ी हूँ।

बादशाह ने नौकरानी को सेज पर सोते हुए देखा तो उसके होश-हवास उड़ गए। उसने नौकरानी को दो-चार कोड़े लगाए। नौकरानी पहले हँसी फिर रोई। राजा ने उसके हँसने और रोने का कारण पूछा तो उसने कहा, ''मैं इसलिए रोई कि कोड़े लगने से मुझे बहुत दर्द हुआ और हँसी इसलिए कि थोड़ी देर सेज पर सोने से मुझे इतने कोड़े पड़े हैं और जो रोज सारी रात इन सेजों पर सोता है उसका क्या हश्र होगा?'' बादशाह आला पात्र आत्मा थी। उसके दिल में ख्याल आया कि यह ज्ञान की बात कह रही है।

मैंने सारे संसार में दो बड़ी लम्बी यात्राएं की हैं। मेरे पास ऐसे बहुत से प्रमाण हैं कि जिन्हें महाराज सावन ने दर्शन दिए हालांकि उन्हें 'नाम' नहीं मिला था लेकिन आपने उन्हें अपनी जानकारी दी। इसी तरह महाराज कृपाल सिंह ने भी बगैर नाम लिए हुओ को खींचा।

मेरा जातिय तजुर्बा है कि जब मैं कीटो अकवाया गया वहाँ एक नन आई। उसने सन्तबानी मैगजीन में मेरी छपी हुई तस्वीर लाकर दिखाई। उसने कहा कुछ अरसे से मैं आपको अंदर इसी तरह का देख रही थी। मुझे आपकी इस तस्वीर ने खींचा है। मेरा कहने का भाव यह है कि जब बारिश होनी हो तो आसमान में बादल छा जाते हैं। जिनका फैसला हो चुका होता है सन्त उन तड़प वाली आत्माओं को प्रत्यक्ष दर्शन भी देते हैं। स्वपन में भी चेतावनी देते हैं कि मैं उस जगह बैठा हूँ तू आ जा।

महात्मा हमें बताते हैं कि जिन आत्माओं का सच्चखंड में फैसला हो जाता है कि अब इस आत्मा को दुःखी दुनियां में नहीं भेजना, उन आत्माओं को परमात्मा सबसे पहले सतसंग में लाता है। महात्मा सतसंग के जरिए हमारे अंदर तड़प पैदा कर देते हैं। वह जब हमारे अंदर तड़प देखते हैं तो हमें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ देते हैं।

कबीर साहब ने देखा कि इस समय किसके दिल में तड़प है यह फूलों की सेज पर सोता है बादशाही में मस्त है क्यों न इसे जगाया जाए? कबीर साहब ने रात के समय सारबान का रूप धारण करके बादशाह के महल के ऊपर चलना-फिरना शुरू कर दिया। बादशाह ने सोचा कि राजमहल में रात के समय कौन आदमी ऊपर घूम रहा है। बादशाह ने पूछा कि तू कौन है? कबीर साहब ने कहा, ''मैं सारबान हूँ मेरे ऊँट खो गए हैं मैं ऊँटों की तलाश कर रहा हूँ।'' बादशाह ने कहा, ''राजमहल में किसी के ऊँट किस तरह आ

सकते हैं?'' कबीर साहब ने कहा, ''तेरे दिल में परमात्मा के लिए तड़प तो हैं क्या फूलों की सेज पर सोकर परमात्मा मिलता है?'' बादशाह के दिल में ख्याल आया कि यह क्या कहानी है क्योंकि ऐसी आत्माओं को जरूर चोट पहुँचती है।

सुबह होने पर कबीर साहब फिर एक रोबदार आदमी का स्वरूप धारण करके बादशाह की कचहरी में चले गए। बहुत से नौकर-चाकर खड़े थे लेकिन रोबदार आदमी को किसी ने नहीं रोका। आपने बादशाह के पास जाकर कहा, ''क्या यह मुसाफिर खाना है?'' बादशाह ने कहा, ''यह राजमहल है कचहरी है।'' कबीर साहब ने पूछा, ''यह राजमहल किसने बनवाया?'' बादशाह ने कहा, ''यह राजमहल मेरे दादा ने बनवाया हैं।'' फिर कबीर साहब ने पूछा कि वह कहाँ गया? बादशाह ने कहा, ''वह अल्लाह ताला को प्यारा हो गया।'' कबीर साहब ने पूछा, ''तेरा बाप कहाँ गया, अगर यह मुसाफिर खाना नहीं तो और क्या है जब यहाँ कोई रह ही नहीं सकता?'' बादशाह के दिल को बहुत चोट लगी। उसने अपने वजीरों से पूछा कि क्या कोई मेरी तसल्ली करवा सकता है क्या कोई मुझे शान्ति दे सकता है?

मैं बताया करता हूँ कि जब तक सच्चा शिष्य नहीं मिलता तब तक पाखंडी गुरु का पता नहीं लगता अगर शिष्य सच्चा हो तो पाखंडी गुरु वहाँ से जरूर भागेगा। उसे पता है कि अब मेरी परख हो जाएगी। जिस तरह कच्ची सरसों में से तेल नहीं निकलता इसी तरह पाखंडी गुरु से क्या मिल जाएगा? वहाँ से रूहानियत का रास्ता खुल ही नहीं सकता। पाखंडी गुरु बातों से तो तसल्ली करवाता है लेकिन उस बेचारे के पास देने-लेने के लिए कुछ नहीं होता।

हिन्दुस्तान ऋषियों-मुनियों का देश है। आम लोग शान्ति की तलाश में इधर ही दौड़ते हैं। बल्ख बुखारा भी अपनी तलाश लेकर

हिन्दुस्तान में आया। वह कई जगह घूमा। उसने बहुत लोगों से पूछा कि ऐसा कोई है जो मेरी आत्मा को शान्ति दे। मुझे मालिक के साथ जोड़े। उसे किसी ने बताया कि काशी में कबीर साहब हैं।

बल्ख बुखारा काशी में कबीर साहब के पास गया तो कबीर साहब ने उससे पूछा, ''तू कौन है कहाँ से आया है?'' बल्ख बुखारा ने अपनी जानकारी देकर कहा, ''मैं बल्ख बुखारा का बादशाह हूँ।'' कबीर साहब ने कहा, ''तू एक बादशाह है और मैं एक गरीब जुलाहा हूँ तेरी मेरी गुजर किस तरह हो सकती है?'' जिनके दिल के अंदर तड़प होती है उनके लिए बादशाहियाँ छोड़नी मुश्किल नहीं। बल्ख बुखारा ने कहा, ''मैं बादशाह नहीं एक गरीब भिखारी बनकर आपके पास आया हूँ। आप मुझे जैसा भी रूखा-सूखा देंगे मैं खा लूँगा। आप मुझे जो काम कहेंगे मैं वह काम करूंगा।'' मैं एक शब्द में कहा करता हूँ:

जे सजना तैं मुर्शिद खुश करना ते तड़प बनौंणी पैंदी ऐ,
घा खोतना पवे जिंद दुखड़े सहे नाम गुरु दा लवे सिर टोकरी उठौणी पैंदी ऐ,
तू मस्ताने वांगू लिट अग्गे, तू प्यार च प्रीतम खिच अग्गे,
मस्ताने वांगू सजना ओए जिंद घट्टे च रूलौनी पैंदी ऐ।

अगर मुर्शिद को खुश करना है तो सबसे पहले दिल में तड़प बनानी पड़ती है। मस्ताना सावन के आगे लेट जाता था। यह आँखो देखी बात है कि हुजूर सावन प्रेमियों को अपने हाथों से खाना दे रहे थे उस समय मस्ताना रेत में लेटते हुए दंडवत करता हुआ आया। महाराज जी इन बातों से खुश नहीं होते थे। मस्ताना कहा करता था, ''मुझे तो अपनी खुशी की गर्ज है मेरे दिल में गुरु का प्यार है।''

कुछ लोगों ने मस्ताना के सिर में गर्म पानी डाल दिया कि यह पागल है। सावन सिंह जी ने मस्ताना से कहा, ''मस्तानेया! मैं तुझे वह चीज दूंगा जो तेरे सारे काम करेगी।'' यह सच है कि हमारे

बागड़ देश में वही हुआ। वह सावन का आसरा लेकर चला। वह सावन का आशिक था। वह सावन के नाम के बगैर किसी का नाम अपने मुँह से लेने के लिए तैयार नहीं था। वह कहा करता था:

जो दम गाफिल सो दम काफिर सानूं मुर्शिद ऐ समझाया।

गुरु के नाम के बिना जो वक्त गुजरता है वह वक्त ही काफिर है। गुरु नानकदेव जी ने भी कहा:

इक तिल प्यारा विसरे तो भक्त कनेही होय।

अगर भक्त एक तिल के लिए भी गुरु को भूल जाता है तो भक्त के अंदर दरार पड़ जाती है। महाराज सावन कहा करते थे, ''जिसके दरवाजे पर बैल खड़ा है उसे फिक्र है। जिसके खेत में नौकर काम करते हैं उस जमींदार को उनका फिक्र है।''

सन्तों का माल कद्रदान लोग ही प्राप्त करते हैं। पिता नालायक बच्चे से धन को छिपाकर रखता है बेशक वह धन को बच्चे के लिए ही रखता है लेकिन जब बच्चा काबिल हो जाता है तो पिता उसे धन दे देता है; पिता काबिल बच्चे के आगे शुरू से ही धन रख देता है।

लोई कबीर साहब के कारोबार में हाथ बँटाती थी। एक दिन लोई ने कबीर साहब से कहा, ''यह बादशाह अपने पास आया है इसे कुछ दें।'' कबीर साहब ने कहा, ''अभी बर्तन तैयार नहीं।'' हम कह देते हैं हम गुरु के प्रेमी हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

गुरु ने परख करी जब मन की छोड़ चला संगीत।

हमारा गुरु के साथ कैसा प्यार है? हम उससे मान-आदर चाहते हैं, मन पीछा नहीं छोड़ता। हमने गुरु की मर्जी के मुताबिक चलना था लेकिन हम गुरु को चलाना चाहते हैं। हम गुरु के सेवक हैं या मन के सेवक हैं? कबीर साहब ने लोई से कहा तू छिलके वगैरहा लेकर छत पर चढ़ जा मैं इसे बुलाता हूँ। जब लोई ने बादशाह

के ऊपर छिलके फैंके तो बलख बुखारा ने कहा, ''अगर मैं बलख बुखारा में होता तो फिर बताता, वह और भी बहुत कुछ बोला।'' माता लोई ने कबीर साहब से कहा कि यह तो इतना कुछ बोलता है मैं तो इसे शरीफ आदमी समझती थी। कबीर साहब ने कहा मैंने तो तुझे कहा था कि बर्तन अभी तैयार नहीं।

इस तरह छह साल और बीत गए। कबीर साहब अंदरूनी राज के वाकिफ थे उन्होंने कहा कि अब बर्तन तैयार है। लोई ने कहा मुझे तो यह पहले जैसा ही दिखाई देता है। कबीर साहब ने कहा कि तू इस बार गंद वगैरहा लेकर छत पर चढ़ जा जब मैं इसे बुलाऊं तो वह गंद इसके ऊपर फैंक देना। जब लोई ने बादशाह के ऊपर गंद फैंका तो बलख बुखारा ने कहा, ''गंद फैंकने वाले तेरा भला हो। मैं तो इससे भी गंदा था।'' कबीर साहब कहते हैं:

फकीरा फकीरी दूर है जैसे पेड़ खजूर,
चढ़ गया तो अमर फल गिर गया तो चकनाचूर।

परमात्मा से मिलना फकीरी करना बहुत मुश्किल है। जिस तरह खजूर का पेड़ बहुत ऊँचा होता है जो उस पेड़ पर चढ़ जाता है वह मीठी खजूर का रस चख लेता है अगर गिर जाता है तो चोटों से बुरा हाल हो जाता है। हम घर से फकीरी करने के लिए निकलते हैं साध संगत में जाते हैं फिर भी मन पीछा नहीं छोड़ता वहाँ जाकर भी मान बड़ाई ढूंढ़ता है। हज़रत बाहू कहते हैं:

ज्योंदया मर रहना होवे ते वेश फकीरी रहिए हू,
जे कोई कड्डे गाल उलांभा जी जी ओहनू कहिए हू,
भंडी ख्वारी बदनामी यार दे पाऊ सहिए हू।

अगर आपने जीते जी मरना है तो इस मार्ग पर पैर रखें। आप लोगों के ताने-मेहने सहने के लिए तैयार हो जाएं; दुःख मुसीबतों को झेलने के लिए तैयार हो जाएं। आपका एक ऐसे दुश्मन के साथ

वास्ता पड़ेगा जो बहुत हठीला है। आपका मजबूत हृदय है तो आप तड़प बनाएं अगर आपमें तड़प है परमात्मा दूर नहीं। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''इंसान का बनना मुश्किल है भगवान का मिलना मुश्किल नहीं।''

मैंने पहले बताया है कि बचपन से ही मेरे दिल में यह ख्याल था कि मुझे सिर्फ तेरा ही आसरा है। बचपन में जिसके दिल में ऐसा ख्याल हो तो बड़े होने पर वह ख्याल कैसे टूट सकता है? मेरी हमेशा खोज रही, मैं दिल में यही महसूस करता था कि मेरी कोई चीज़ खोई हुई है। मुझे चारपाई पर सोना अच्छा नहीं लगता था। मेरी माता कई बार नाराज भी होती कि तू धरती पर क्यों सोता है क्योंकि वह चारपाई पर सुलाकर जाती थी। मैं कभी-कभी धरती पर सोया हुआ पकड़ा जाता; मेरी माता मुझसे नाराज हो जाती।

जब मेरे अंदर तड़प बन गई तो साल पहले ही मकान बनाना शुरू किया। दिल से दिल को राह होती है यह किसने बताया कि अब मौका आ गया है। मैंने अपने साथियों को बताया कि यहाँ महाराज आएंगे। उन महाराज जी के लिए नहाने वाला चौबारा, खाना खाने वाला चौबारा, आराम करने वाला चौबारा, उनके साथ मिलने वाला चौबारा बनवाया। मकान बनाने के लिए साठ मिस्त्री लगाए, दिन में भी काम होता और रात को भी गैस जलाकर काम चलता रहता था।

लोग मुझ पर हँसा करते थे। जब कोई मुझसे पूछता कि किस महाराज ने आना है लेकिन मैं उस महाराज को नहीं जानता था। मुझमें सिर्फ तड़प और प्यार ही था, दिल की लगी को कौन जानता है? कोई बुझाने वाला आ ही जाएगा।

जब उस दयालु कृपाल ने देखा कि कोई बचपन से ही मेरी याद मना रहा है। वह दयालु बिना बुलाए ही पाँच सौ किलोमीटर चलकर आ गए। वे दिलों की जानते हैं, अंतर्यामी होते है। वह अपने आप दया करने के लिए आए। सवाल यह है कि हम कितनी दया ले रहे हैं और हमने अपने बर्तन को कितना तैयार किया हुआ है? हुजूर ने मकान को देखकर कहा, ''मैं बहुत खुश हूँ।'' उस समय आँखे चार होते ही दिल खिंच गया, यह पूछना ही भूल गए कि आप कौन है कहाँ से आए हैं और किस जाति के हैं?

मुझ पर महाराज सावन का बहुत असर था। महाराज सावन कहा करते थे, ''हमनें साधु के साथ कोई रिश्ता-नाता नहीं करना उसके साथ खाना-पीना नहीं चाहे वह किसी भी जाति का हो हमने तो उससे रास्ता लेना है। सन्तों के अंदर जो ताकत काम करती है उसके साथ ताल्लुक जोड़ें।'' कबीर साहब कहते हैं:

जाति न पूछो साध की पूछ लीजिए ज्ञान,
मोल करो तलवार का पड़ी रहन दयो म्यान।

परमपिता कृपाल ने कहा, ''मैं तेरे मकान और जमीन पर बहुत खुश हूँ लेकिन तुझे प्यार से सलाह देता हूँ कि तू इसे छोड़ दे।'' उनके कहने पर मैंने खुश होकर मकान छोड़ दिया। सोचकर देखें! आप जिसे न जानते हों उसके साथ आपका ताल्लुक न हो वह आदमी आपसे आपकी जिंदगी की प्रोपर्टी छोड़ने की कहे यह बात कर लेनी बहुत आसान है। लोग डेरों की जायदादों के लिए लड़ते फिरते हैं कचहरियों तक जा पहुँचते हैं।

आप महाराज कृपाल का इतिहास पढ़कर देखें! आप अपना बना हुआ मकान डेरा ब्यास में छोड़ आए थे। आपने कोई झगड़ा खड़ा नहीं किया क्योंकि परमात्मा जिसके बस हो गया क्या वह मकान और जायदाद नहीं बना सकता?

महाराज सावन ने मस्ताना के लिए गुफा बनाई थी और उससे कहा था, ''तूने मेरे मरने पर भी नहीं आना। मैं तुझे जिंदा राम दूँगा जो तेरे सारे काम करेगा, सन्तों का राम छोटा सा नहीं होता।'' इसी तरह परम पिता कृपाल ने अपनी दया करके मेरे लिए भी गुफा बनाकर दी। कहीं हम सोचें! गुफा बनाकर ही मन बस में आ जाएगा यह बात गलत है। महाराज सावन सिंह कहा करते थे, ''बहुत से साँप खुड्डो में पड़े हैं कहीं यह ख्याल हो कि हम भी गुफा बना लें शायद कामयाब हो जाएगे।'' यह काम करने से, बैठने से ही होगा।

जब दूसरी वर्ल्ड वॉर लगी है उस समय मेरी उम्र 15-16 साल थी। उस समय लोग बीस-तीस साल की सजा भुगतने के लिए तैयार थे लेकिन जर्मन की जंग में जाने के लिए तैयार नहीं थे। मैंने खुशी से जंग में जाने के लिए अपना नाम लिखवाया। जब गुफा में जाना होता था उस समय मन शेर बनकर खड़ा हो जाता था।

मैंने गुफा में जाते हुए कहा, ''हे दाते कृपाल! मेरी लाज तेरे हाथ में है तू मेरी लाज रखना।'' वहाँ अपना बाहु बल काम नहीं

करता। जब मरीज डाक्टर के आगे फरियाद करता है तो डॉक्टर हमदर्दी दिखाता है। जब सच्चे दिल से तड़प की तो दयालु कृपाल ने आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''बेटा! इन्हें संसार की तरफ नहीं खोलना।'' मेरी कोई संसारिक मांग नहीं थी। मैंने यही कहा:

नैन ललारी नैन कसूंभा नैन नैना नूं रंग दे,
ईक नैन नैना दी करन मजूरी ते मेहनत मूल नहीं मंगदे।

यह आँख आँख की मजदूरी है। क्या यह गुरु भक्ति है कि पाँच मिनट अभ्यास पर बैठे और आधा घंटा अरदास करने में लगाया कि तू हमारा यह काम कर, वह काम कर। यह तो मन की भक्ति है। सच्चा आशिक आँख की मजदूरी करता है। उस आँख में इतनी ताकत होती है कि वह सारी दुनियां को रंग देती है।

मेरा आपको समझाने का यही भाव है अगर हम अपने दिल में तड़प बनाएं तो परमात्मा आने के लिए तैयार है। वह हमेशा ही दयालु होता है दया करता है। हमें भी चाहिए कि अपने दिल के अंदर तड़प बनाएं। जब तक हमारे अंदर परमात्मा के लिए तड़प नहीं दुनियां की जायदादों की तड़प है तब तक हम दुनियां को माँगते हैं।

महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि पहले हमने अपने मन को शान्ति देनी है तभी हम दूसरों को शान्ति दे सकते हैं अगर हमने कोई कुर्बानी की है तभी हम दूसरों को प्रेरित करने के हकदार हैं। खुद कभी चौंकड़ी लगाकर अभ्यास नहीं किया और लोगों से कहते हैं कि अभ्यास करो। महात्मा कहते हैं कि ऐसे लोग सारी ज़िंदगी खुद भी खुष्क रहते हैं दूसरों को भी खुष्क रखते हैं।

महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि हमें अपने अंदर तड़प बनानी चाहिए अगर तड़प होगी तो परमात्मा दरवाजा खोलेगा अगर परमात्मा दरवाजा खोलेगा तो हम अंदर जाकर अपनी आँखों से देख लेंगे।

***

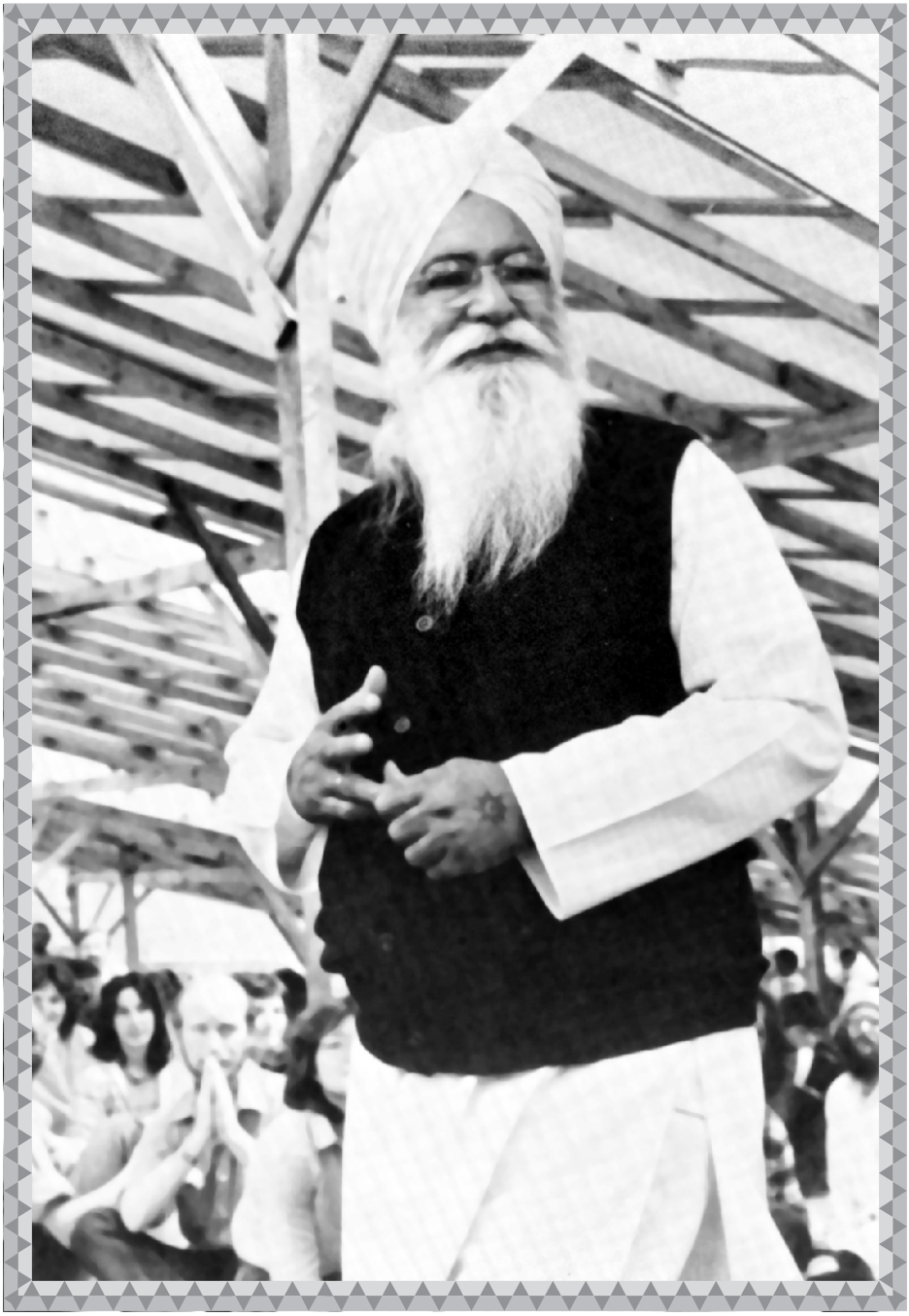

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सच्चा शिष्य

वारां - भाई गुरदास जी

रीबोला इटली

आपके आगे भाई गुरदास की बानी रखी जा रही है। भाई गुरदास को चार गुरुओं की संगत में रहने का मौका मिला था। आप पंथ में सफल रहे और आपने सच्चखंड तक रसाई की।

एक बार एक प्रेमी ने महाराज सावन सिंह जी से पूछा, ''गुरु गरीबदास की लेखनियों में आया है कि दसवें द्वार में पहुँचकर व्यक्ति साधु बनता है। क्या दसवें द्वार में पहुँचे हुए साधु को नामदान देना चाहिए?'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''दसवां द्वार तो क्या अगर शिष्य सच्चखंड भी पहुँच जाए तो भी उसे अपने गुरु के हुक्म के बिना 'नामदान' नहीं देना चाहिए।''

भाई गुरदास जी भजन-अभ्यास में कामयाब थे। आप सच्चखंड पहुँच चुके थे तो भी आप चारों गुरुओं के **सच्चे शिष्य** बनकर रहे। आप चारों गुरुओं के समय चोटी के सेवादार रहे। आप ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाते थे।

मैं पिछले कुछ दिनों से आपको 'नाम' की महिमा और नाम जपने के फायदे बता रहा हूँ। 'नाम' सुख और शान्ति का दाता है लेकिन दुर्भाग्य से हमने नाम की तरफ पीठ की हुई है। हम नाम केवल पूर्ण गुरुओं से ही प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि वे ही इस संसार में हमें नाम से जोड़ने के लिए आते हैं।

परमपिता परमात्मा खुद इस संसार में आता है वह जिन पर दया करना चाहता है उनको पूर्ण गुरु के चरणों में ले आता है और उन्हें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ देता है।

जो प्रेमी यहाँ पर नामदान की इच्छा लेकर आए थे उन्हें आज नामदान मिल गया है। अब हमारा फर्ज है कि हम 'शब्द-नाम' की भक्ति करें और सतगुरु के **सच्चे शिष्य** बनें। इस बानी में भाई गुरदास जी उन चीजों के बारे में बताएंगे जो हमारे लिए **सच्चा शिष्य** बनने में मददगार और फायदेमंद है।

बलिहारी तिन्हाँ गुरसिखाँ जाइ जिना गुर दरसनु डिठा।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अगर शिष्य गुरु की ओर एक कदम बढ़ाता है तो गुरु उससे मिलने के लिए सैंकड़ों कदम आगे चलकर आता है।'' भाई गुरदास को गुरुओं से बहुत प्यार था इसलिए गुरु भी आपसे बहुत प्यार करते थे। जब भाई गुरदास का अंत समय आया तो गुरु हरगोविंद जी ने भाई गुरदास की देह को श्मशान भूमि में ले जाने के लिए कंधा दिया।

जिसने मिश्री खाई है वही मिश्री के स्वाद को जानता है। जिस तरह भूखा आदमी भोजन की कद्र करता है, प्यासा आदमी पानी की कद्र करता है उसी तरह जिन शिष्यों के अंदर गुरु प्रेम भरा होता है उनको ही सतगुरु के दर्शन की कद्र होती है। भाई गुरदास के अंदर गुरु की कद्र और प्यार था।

भाई गुरदास कहते हैं, ''मैं उन शिष्यों पर बलिहार जाता हूँ जो इंसानी जामा पाकर सतगुरु के दर्शन करने का मौका पाते हैं और सतगुरु के चरणों में शीश झुकाते हैं।''

बलिहारी तिन्हाँ गुरसिखाँ पैरी पै गुर सभा बहिठा।

भाई गुरदास फरमाते हैं, ''मैं उन शिष्यों पर बलिहार जाता हूँ जो सतगुरु से नाम ले लेते हैं और जिन्हें सतगुरु के सतसंग में जाने का मौका मिलता है।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''गुरु को इंसान न समझें, परमात्मा खुद इंसानी जामें में काम करता है।''

बलिहारी तिन्हाँ गुरसिखाँ गुरमति बोल बोलदे मिठा।

अब आप फरमाते हैं, ''मैं उन शिष्यों पर बलिहार जाता हूँ जो मनमत को छोड़कर गुरुमत पर चलते हैं।'' सतगुरु हमेशा हमें परमपिता परमात्मा से जोड़ने के लिए आते हैं। वह सदा हमें अच्छा उपदेश देते हैं कि सदा मीठे वचन बोलें और विनम्र बनें।

सतगुरु कृपाल के हृदय में लोगों के लिए बहुत दर्द और हमदर्दी थी। आप कहा करते थे, ''जो आदमी अपने नज़दीक रहने वालों के साथ प्यार नहीं करता लेकिन परमात्मा के साथ प्यार करने का दावा करता है उसका यह दावा निराधार और झूठा है।''

बलिहारी तिन्हाँ गुरसिखाँ पुत्र मित्र गुरभाई इठा।

आप कहते हैं, ''जो सतगुरु से प्यार करता है वह संगत से भी प्यार करता है। मैं उन सतसंगियों पर बलिहार जाता हूँ जो दूसरे शिष्यों को बहन-भाई समझते हैं और जो उनसे छोटे हैं उन्हें बेटे और बेटियाँ समझते हैं।''

बलिहारी तिन्हाँ गुरसिखाँ गुर सेवा जाणनि अभिरिठा।

अब आप कहते हैं, ''मैं उन शिष्यों पर बलिहार जाता हूँ जो सतगुरु की सेवा, प्यार और दीनता से करते हैं।'' प्यारेयो! जो सतगुरु से प्यार करते हैं वे सतगुरु के बच्चों से भी प्यार करते हैं वे उनकी सेवा प्यार और दीनता से करते हैं।

मैं अक्सर आपको गुरु अर्जुनदेव जी महाराज के एक शिष्य माहणा की कहानी बताया करता हूँ। वह कभी भी संगत में सेवा नहीं करता था किसी भी सेवादार की बात नहीं सुनता था। वह संगत में आता लंगर से खाना खाता और वहीं सो जाता था। जब भी कोई उसे काम करने के लिए कहता तो वह जवाब देता कि मैं तुम्हारा कहना क्यों मानूं? मैं अपने बराबर वालों का हुक्म नहीं

बजाता। मैं तो केवल गुरु का ही हुक्म मानूंगा इसलिए जिम्मेवार लोगों ने गुरु अर्जुनदेव जी से शिकायत की कि माहणा संगत में आता है, लंगर में खाता और सो जाता है वह कोई सेवा नहीं करता। वह कहता है कि मैं किसी बराबर वाले के कहने पर कोई सेवा नहीं करूंगा मैं केवल गुरु का दिया हुआ काम ही करूंगा।

गुरु अर्जुनदेव ने माहणा को बुलाया और पूछा कि वह अपने सतसंगी भाईयों का कहना क्यों नहीं मानता? सेवा क्यों नहीं करता? माहणा ने कहा, ''महाराज! मैं केवल आपका कहना ही मानूंगा।'' गुरु अर्जुनदेव ने कहा, ''जो भी जिम्मेवार लोग तुम्हें कहते हैं वे गुरु की ओर से ही कहते हैं तुम्हें उनकी मदद करनी चाहिए फिर आपने कहा कि सतगुरु के हुक्म को मानना बहुत कठिन होता है।'' माहणा अपनी जिद पर अड़ा रहा कि जो हुक्म गुरु अर्जुनदेव जी देंगे वह वही करेगा। तब गुरु अर्जुनदेव ने कहा, ''अगर तुम जिद् करते हो तो मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम जंगल में जाकर आग जलाओ और उस आग में अपने आपको जला दो।''

माहणा ने कहा, ''ठीक है! गुरु जी मैं ऐसा ही करूंगा।'' वह जंगल में गया और उसने आग जलाई पर वह अपने जीवन से प्यार करता था मरना नहीं चाहता था इसलिए वह आग के चारों ओर चक्कर लगाने लगा कि अब आगे क्या करूं? वह अपनी जिंदगी को गुरु के हुक्म से ज्यादा कीमती समझता था। उसके मन ने कहा कि उसे गुरु के हुक्म को भी नहीं मानना चाहिए इसलिए उसने निश्चय किया कि वह गुरु के हुक्म को नहीं मानेगा।

तभी वहाँ एक चोर आया, पुलिस चोर का पीछा कर रही थी क्योंकि उसने किसी धनवान के यहाँ कीमती वस्तुओं की चोरी की थी। उस चोर ने माहणा से पूछा, ''तुम आग के चारों ओर चक्कर क्यों लगा रहे हो?'' माहणा ने उसे सारी कहानी सुनाई। चोर ने

माहणा से कहा, ''तुम गुरु का दिया हुआ वचन मुझे सकंल्प करवा दो तो मैं तुम्हें यह सब धन दे दूंगा।'' माहणा तो पहले ही गुरु के हुक्म से पीछा छुड़वाना चाहता था इसलिए उसने चोरी की वस्तुओं के बदले उस चोर को गुरु का वचन दे दिया। चोर खुशी से आग में कूद गया, गुरु की आज्ञा मानने से उसे मुक्ति मिल गई क्योंकि सतगुरु आज्ञा मानने वाले की संभाल करते हैं।

कुछ देर बाद वहाँ पुलिस आई। माहणा के पास चोरी का माल मिला तो पुलिस ने उसे चोर समझा। माहणा ने पुलिस को भरोसा दिलवाने की बहुत कोशिश की कि वह चोर नहीं है चोर तो आग में जलकर मर चुका है लेकिन चोर वही कहलाता है जिसके पास चोरी का माल बरामद होता है इसलिए उसे कड़ा दण्ड दिया गया।

यहाँ बहुत से लोग आए उन्होंने तन की सेवा की जिससे यहाँ आने वाले प्रेमियों को फायदा हुआ। उन्होंने अपने तन को लायक और पवित्र बनाया। बहुत से प्रेमियों ने इस कार्यक्रम के लिए धन की सेवा की। इस तरह उन्होंने अपनी कमाई को पवित्र और सफल बनाया और बहुत से प्रेमियों ने भजन-सिमरन करके मन से सतगुरु की सेवा की। चाहे प्रेमियों ने यहाँ तन, मन या धन की सेवा की यह सब सतगुरु की सेवा थी।

सतगुरु सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अमीर लोग धन की सेवा करते हैं और गरीब लोग भजन करते हैं। जो लोग उनके धन से फायदा उठाकर भजन करते हैं उनके भजन करने का हिस्सा धन की सेवा करने वालों को भी मिलता है।''

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''जो संगत में आकर तन, मन और धन से सेवा करके अपने तन, मन और धन को सफल बनाते हैं, मैं उन पर बलिहार जाता हूँ ''

बलिहारी तिन्हाँ गुरसिखाँ आपि तरे तारेनि सरिठा।

अब आप फरमाते हैं, ''मैं गुरु के उन शिष्यों पर कुर्बान जाता हूँ जो अपनी बुद्धि और ज्ञान को छोड़कर सन्तमार्ग पर चलते हैं। वे स्थूल, सूक्ष्म और कारण मंडलों से ऊपर उठकर सच्चे घर को वापिस जाते हैं। वे स्वयं भी तर जाते हैं और दूसरों को भी तार देते हैं। मैं सतगुरु के ऐसे शिष्यों पर अपने आपको कुर्बान करता हूँ।''

संगत ही गुरु का परिवार होता है क्योंकि संगत के अंदर से ही किसी ने उनके स्थान पर काम करना होता है। परिवार के सदस्य दुनियावी धन-दौलत के ही उत्तराधिकारी होते हैं।

गुरसिख मिलिआ पाप पणिठा।।

प्यारेयो! गुरु का **सच्चा शिष्य** बनना बड़ा ही मुश्किल होता है क्योंकि गुरु के शिष्य की शान बहुत ऊँची होती है; उसमें बहुत से अच्छे गुण होते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

गुरु सतगुरु का जो सिख अखाए, भलके उठ हरि नाम धिआवै,
उदमु करे भलके परभाती, इसनानु करै अमृतसरि नावै।

आप कहते हैं कि सतगुरु का शिष्य सुबह उठकर सख्त मेहनत करता है। वह परमात्मा का नाम जपता है और अमृतसर में स्नान करता है। वह सुबह से ही बानी और सतगुरु की बड़ाई का गान करता है। मैं ऐसे शिष्य के चरणों की धूल माँगता हूँ जो दूसरे प्रेमियों को भी नाम जपाता है।

गुरु अर्जुनदेव जी जिस अमृतसर की बात कर रहे हैं वह अमृत का सरोवर हमारे अंदर है। जो शिष्य स्थूल, सूक्ष्म और कारण के पर्दे उतारकर दसवें द्वार में जाता है, अपनी आत्मा को अमृत के सरोवर में स्नान करवाता है वही **सच्चा शिष्य** है। हमारे पिछले जन्मों के कई पाप ऐसे सेवक के दर्शन करने से समाप्त हो जाते हैं अगर हम सौभाग्यशाली हैं तो हमें ऐसे शिष्य के दर्शन मिलते हैं।

कुरबाणी तिन्हाँ गुरसिखाँ पिछल राती उठि बहंदे।

आप प्यार से कहते हैं, ''मैं उन शिष्यों पर कुर्बान जाता हूँ जो रात के पिछले पहर में नींद को छोड़कर भजन में जुड़ जाते हैं।''

बाबा बिशनदास सिक्ख इतिहास से एक छोटी सी कहानी सुनाया करते थे कि एक बार गुरु नानकदेव जी को 'आलस्य' मिला। आलस्य एक छोटे से कंबल की सिलाई कर रहा था जिसमें बहुत से सुराख थे। गुरु नानकदेव जी ने पूछा, ''तुम कौन हो, क्या कर रहे हो?'' उसने कहा, ''मैं आलस्य हूँ। मैं हर सुबह लोगों पर यह कंबल डालता हूँ ताकि वे उठ न सकें और परमात्मा की भक्ति न कर सकें लेकिन बड़े ही दुःख की बात है कि जो लोग आपसे 'नाम' ले लेते हैं वे मेरा कंबल फाड़ देते हैं और इसमें इतने सुराख पड़ जाते हैं कि मुझे रोज कम्बल की सिलाई करनी पड़ती है क्योंकि वे मुझे स्वीकार नहीं करते।''

भाई गुरदास कहते हैं, ''मैं गुरु के उन शिष्यों पर कुर्बान जाता हूँ जो रात के पिछले पहर उठकर परमात्मा की भक्ति करते हैं। रात के पिछले पहर वही उठेगा जो आलस्य की बात नहीं मानेगा।''

कुरबाणी तिन्हाँ गुरसिखाँ अंम्रितु वेलै सरि नावंदे।

आप कहते हैं, ''मैं उन शिष्यों पर कुर्बान जाता हूँ जो सुबह तीन बजे अमृत वेला में उठते हैं और सतगुरु की ओर मुँह करके उसके आगे शीश झुकाते हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बुरे कम नूं उठ खलोया, नाम के वेले पै पै सोया।

हम बुरा काम करने के लिए जाग जाते हैं लेकिन भजन करने के समय सोते रहते हैं।

कुरबाणी तिन्हाँ गुरसिखाँ होइ इक मनि गुर जापु जपंदे।

आप कहते हैं, ''मैं गुरु के उन शिष्यों पर कुर्बान जाता हूँ जब वे भजन पर बैठते हैं तो उनमें कोई दुनियावी विचार नहीं होते हैं। भजन में बैठकर वे भजन ही करते हैं।''

मैं कहा करता हूँ; अगर पाँच साल का बच्चा किसी दुकान पर बैठा हो तो हम वहाँ से छोटी सी वस्तु भी नहीं उठाते कि वह हमें देख लेगा। परमात्मा हमारे अंदर है वह हमारी हर हरकत को देख रहा है लेकिन हम परमात्मा से उस बच्चे जितना भी डर नहीं रखते।

आप जानते हैं कि जब हम भजन पर बैठते हैं तो हमारा प्यारा सतगुरु जो हमारे अंदर बैठा हुआ है वह हमें देख रहा होता है। अगर हम उस समय दुनियावी ख्यालों को लाते हैं तो क्या हम अपने सतगुरु का अपमान नहीं कर रहे होते? भजन में दुनियावी ख्याल लाकर हम अपना ही नुकसान नहीं कर रहे होते बल्कि सतगुरु का भी अपमान कर रहे होते हैं; वह बैठा हुआ हमें देख रहा होता है।

हमारे प्यारे सतगुरु ने हमें डायरी रखने का उपदेश दिया। डायरी से हम अपनी जिंदगी बना सकते हैं। हम डायरी में लिखते हैं कि हमने एक या दो घंटे अभ्यास किया लेकिन उस एक या दो घंटे के बारे में नहीं सोचते कि हम कितनी बार सतगुरु से जुड़े या हमने कितना समय दुनियावी ख्यालों के साथ बिताया।

कबीर साहब कहते हैं, ''किसी शिष्य का चाहे एक क्षण के लिए तन थिर हो मन थिर हो सुरत और शब्द थिर हो। ऐसे शिष्य का भजन परमात्मा को स्वीकार होता है।''

गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज कहते हैं, ''जो नाम का सिमरन करता है एक क्षण के लिए भी ध्यान लगाता है वह काल के जाल में नहीं पड़ता।''

कुरबाणी तिन्हाँ गुरसिखाँ साधसंगति चलि जाइ जुड़ंदे।

आप कहते हैं, ''मैं गुरु के उन शिष्यों पर कुर्बान जाता हूँ जो प्यार से सतसंग में जाते हैं और सतसंग के वचनों को ध्यान से सुनते हैं। पूर्ण सतगुरु का सतसंग नाम के सरोवर की तरह है। सतसंग में जाकर हमें अपनी गलतियों के बारे में पता चलता है और भक्ति करने की प्रेरणा मिलती हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

मन दिया किसी और को तन साधां के संग,
कहे कबीर कैसे लगे कोरी गज्जी रंग।

जब शिष्य का ध्यान कहीं और हो तो शिष्य पर नाम का रंग कैसे चढ़ सकता है? हम यहाँ सतसंग सुनने आए हैं लेकिन हम सतसंग में सोए रहते हैं अगर लोहे और पारस के बीच में पर्दा हो तो लोहा सोना कैसे बन सकता है?

कुरबाणी तिन्हाँ गुरसिखाँ गुरबाणी निति गाइ सुणंदे।

आप कहते हैं, ''मैं उन शिष्यों पर कुर्बान जाता हूँ जो गुरु की संगत में जाकर गुरु की लिखी बानी या शब्द पढ़ते हैं। भजन गाने से हमारा मन शांत होता है और अंदर गुरु का प्यार जाग जाता है।''

कुरबाणी तिन्हाँ गुरसिखाँ मनि मेली करि मेलि मिलंदे।

आप प्यार से कहते हैं, ''मैं उन शिष्यों पर कुर्बान जाता हूँ जो जब कभी दूसरे सेवकों से मिलते हैं तो सतगुरु के बारे में बातें करते हैं। सतगुरु के बारे में वहीं बात करेगा जो सतगुरु से जुड़ा है। प्रेमी को अपने प्यारे सतगुरु की बातें सदा प्यारी लगती हैं।''

महाराज सावन सिंह जी का एक सतसंगी महात्मा चतुरदास था। महात्मा चतुरदास कहते हैं, ''जहाँ सतगुरु की बातें नहीं होती ऐसी जगह जाना बेकार होता है।''

कुरबाणी तिन्हाँ गुरसिखाँ भाइ भगति गुरपुरब करंदे।

आप कहते हैं, ''सतगुरु की याद के दिन वही मनाएगा जिनके अंदर गुरु का प्यार होगा। मैं सतगुरु के उन शिष्यों पर कुर्बान जाता हूँ जो सतगुरु की यादों से जुड़े दिन मनाते हैं।''

गुर सेवा फलु सुफल फलंदे।।

जब हम सतगुरु की यादों से जुड़े दिनों को मनाते हैं तो हमारे अंदर गुरु भक्ति की तड़प उठती है, गुरु का प्यार जाग जाता है। जो शिष्य तन, मन और धन की सेवा करते हैं उन्हें सतगुरु की याद और भजन-सिमरन करने का मौका मिलता है।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''सन्त कभी अपना जन्मदिन मनाकर खुश नहीं होते। जन्मदिन वह होता है जब हमारी आत्मा इस शरीर में कैद होती है लेकिन सच्चा जन्मदिन वह है जब हमारी आत्मा 'शब्द' में एक होकर काल के पंजे से मुक्त हो जाती है, अपने सच्चे घर वापिस जाती है।''

प्यारेयो! अगर हम अपनी शक्ल देखना चाहते हैं तो हमें दर्पण में देखना पड़ता है। इसी तरह सतगुरुओं को अपना जन्मदिन मनाने की जरूरत नहीं होती लेकिन शिष्यों को इसकी बहुत जरूरत होती है। जिस दिन सतगुरु संसार में आते हैं वह दिन बहुत ही पवित्र दिन होता है क्योंकि परमात्मा ने उस दिन संसार में दया की बहुत वर्षा की होती है। उस दिन परमात्मा खुद मनुष्य का तन धारण करके संसार में आता है इसलिए सेवकों के लिए जन्मदिन मनाना बहुत बड़ा मतलब रखता है; ये दिन बहुत ही पवित्र होते हैं।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि वह परिवार धन्य है जिसमे सतगुरु जन्म लेते हैं वे माता-पिता धन्य होते हैं जिन्हें सतगुरु के माता-पिता बनने का सौभाग्य मिलता है। उस सतगुरु ने नाम की भक्ति की और अपने आपको मुक्त कर लिया; जिन्होंने उसके दर्शन किए वे भी मुक्त हो गए।

भाई गुरदास जी ने हमें प्यार से गुरु के सच्चे शिष्यों के बारे में बताया कि किस तरह कोई **सच्चा शिष्य** बन सकता है। कौन से स्थान पर पहुँचकर गुरु का **सच्चा शिष्य** बनता है। आपने हमें यह भी बताया कि हमारे लिए सच्चा शिष्य बनना क्यों जरूरी है? इसलिए हमें गुरु की आज्ञा के अनुसार भक्ति करनी चाहिए और **सच्चा शिष्य** बनना चाहिए। हमें खुशी-खुशी वफादारी और ईमानदारी से सतगुरु की भक्ति करनी चाहिए।

***

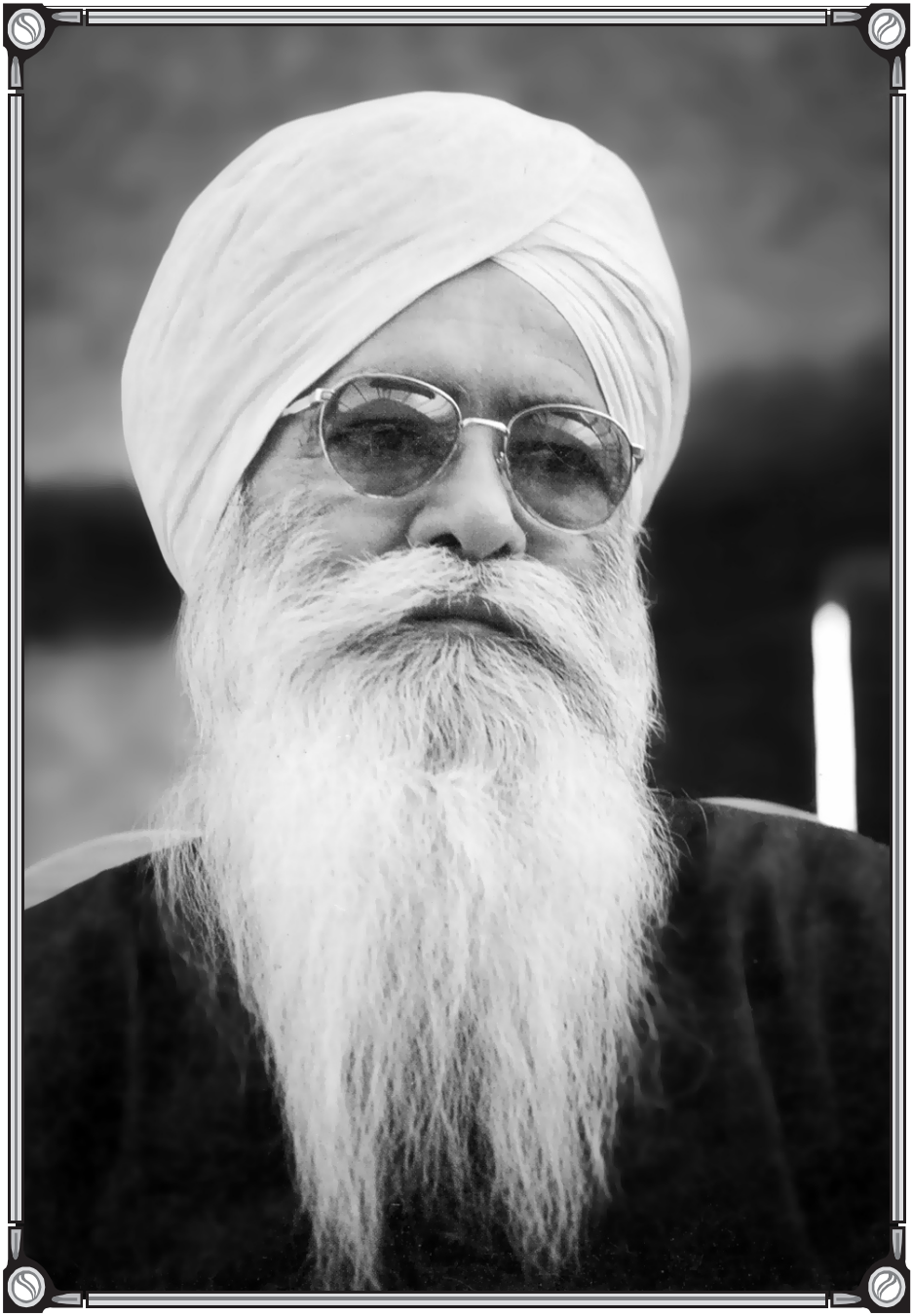

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

***एक प्रेमी** : जीवित गुरु ने जो ग्रुप लीडर बनाए हुए हैं, गुरु के चोला छोड़ने के बाद उनकी क्या जिम्मेवारी है? क्या वे पहले की तरह सतसंग जारी रख सकते हैं। संगत में बे-नामलेवा भी आते हैं वे नाम लेना चाहते हैं उनके प्रति ग्रुप लीडर की क्या जिम्मेवारी है?*

बाबा जी : ग्रुप लीडर कह लें या मुखिया कह लें सतगुरु उन्हीं को ग्रुपलीडर थापते हैं जिन्हें वे सबसे पहले देना चाहते हैं अगर ग्रुप लीडर सच्चे दिल से मान बड़ाई से ऊपर उठकर यह काम करे तो सतगुरु के जीवनकाल में ही वह जरूर अंदर जाएगा। वह सच्चाई को समझेगा भटकेगा नहीं और जो प्रेमी उसके ग्रुप में आएँगे उन्हें भी भटकने नहीं देगा।

प्यारेयो! मैं हमेशा बताया करता हूँ कि सतगुरु कभी भी मरता नहीं वह सदा है, वह आज भी है और पहले भी था। जो आदमी यह ख्याल करता है कि गुरु मर गया उसे कोर्ट में खड़ा करके उसके ऊपर मुकदमा करें कि तुमने मरने वाला गुरु क्यों किया? गुरु शरीर बदलता है लेकिन उसकी ताकत संसार में हमेशा कायम रहती है; वह ताकत किसी न किसी जगह जरूर काम करती है। जो लोग भजन के चोर हैं भजन करके अंदर नहीं जाते वे लोग गुरु के जाने के बाद पार्टियों में बंट जाते हैं खुद गुमराह होते हैं औरों को भी गुमराह कर देते हैं।

***एक प्रेमी** : विवेक बुद्धि, अन्दरुनी तरक्की और निन्दा में क्या फर्क है? क्या इनका आपस में कोई संबंध है?*

बाबा जी : हम निन्दा तब तक ही करते हैं जब तक हमने तरक्की नहीं की होती, जब हम तरक्की करके अंदर जाते हैं तब

हमारे अंदर विवेक बुद्धि पैदा हो जाती है। विवेक का मतलब सच और झूठ का निर्णय करना। विवेक बुद्धि वाले को किसी के सहारे की जरूरत नहीं होती वह खुद निर्णय करता है कि क्या अच्छा क्या बुरा है। पारब्रह्म में पहुँचकर हमारे अंदर विवेक बुद्धि पैदा होती है।

हमारी आत्मा पर स्थूल पर्दा और स्थूल माया है। जब हम सूक्ष्म देश में जाते हैं तो वहाँ सूक्ष्म पर्दा और सूक्ष्म माया है। जब हम कारण देश में जाते हैं वहाँ कारण पर्दा और कारण माया है। जब हम ब्रह्म की चोटी से ऊपर चले जाते हैं अपनी आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँचते हैं तब हमारे अंदर विवेक बुद्धि पैदा हो जाती है। पारब्रह्म पहुँचा हुआ साधु बुराई के लिए सोच भी नहीं सकता।

जिन सन्त-महात्माओं ने रातें जागकर बहुत मेहनत से भजन-अभ्यास किया होता है वे किसी की निन्दा नहीं करते, न ही किसी को निन्दा करने की इज़ाजत देते हैं। दसवें द्वार पर पहुँचकर विवेक बुद्धि और सुमति प्राप्त हो जाती है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

हंसनी छानों दूध और पानी।

हंस की चोंच में यह गुण है कि वह जब अपनी चोंच को मानसरोवर में डालता है तो दूध और पानी अलग हो जाता है इसी तरह जब हमारे अंदर विवेक बुद्धि पैदा हो जाती है तो अपने आप ही ज्ञान पैदा हो जाता है, अच्छाई और बुराई का पता लग जाता है। यहाँ पहुँची हुई आत्मा जब नीचे नजर मारती है तो उसे साफ दिखाई देता है जिस तरह कोई पहाड़ पर खड़ा है वह नीचे देखे तो उसे बिलकुल साफ दिखाई देता है। हमारी तरक्की दुनियां के किसी भी पैमाने से मापी नहीं जा सकती। हमें किसी ने नहीं बताना कि हम तरक्की कर रहे हैं या नहीं! यह अपनी आँखों से खुद ही देखना है।

हमारी यह हालत है कि हम अंदर नहीं जाते अगर थोड़ा बहुत भजन-अभ्यास करते हैं तो प्रेमी हमें मान और आदर देना शुरु

करते हैं। उन्हें लगता है कि शायद यह अंदर जाता है अगर वह कमाई वाला है तो मान-बड़ाई में नहीं आएगा। अगर चार आदमी हमें माथा टेकने लग जाएं तो हम अपने अंदर अहंकार पैदा कर लेते हैं। पलटू साहब कहते हैं:

मन महीन कर लीजिए जब भयो लागे हाथ,
जब भयो लोग हाथ नीच होए सबसे रहना पच्छा पच्छी त्याग।

आप कहते हैं फिर आप किसी का पक्ष नहीं लेंगे अहंकार को त्याग देंगे और मालिक में समाए रहेंगे।

***एक प्रेमी** : आप हमें जो दर्शन देते हैं क्या हमें ये दर्शन भजन-अभ्यास करने से मिलते हैं; या अपनी किस्मत से या आपकी दया से मिलते हैं?*

बाबा जी : सबका मूल मुद्दा अभ्यास ही है। जब हम अभ्यास करते हैं तो हमारी भावना बन जाती है। नेक काम करने से नेक और बुरा काम करने से बुरी भावना बनती है। उस भावना के मुताबिक ही हमें आगे दर्शन मिलते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जाकी होए भावना जैसी हर मूरत देखी तिन तैसी।

सन्त-सतगुरु सबसे एक जैसा प्यार करते हैं। वे सबको एक जैसा देना चाहते हैं लेकिन जैसी हमारी भावना होती है हम अपने बर्तन के मुताबिक ही प्राप्त करते हैं।

जब परम पिता कृपाल ने मुझे 'नामदान' देने का हुक्म दिया उस समय आपने मुझे वहाँ बैठे प्रेमियों को थ्योरी समझाने के लिए कहा। मैंने महाराज जी से कहा कि आप इन्हें अपना असली रूप दिखा दें कि आप क्या हैं फिर मन्दिर-मस्जिद का झगड़ा नहीं रहेगा घर-घर में आपका प्यार हो जाएगा लोगों को पता चल जाएगा कि

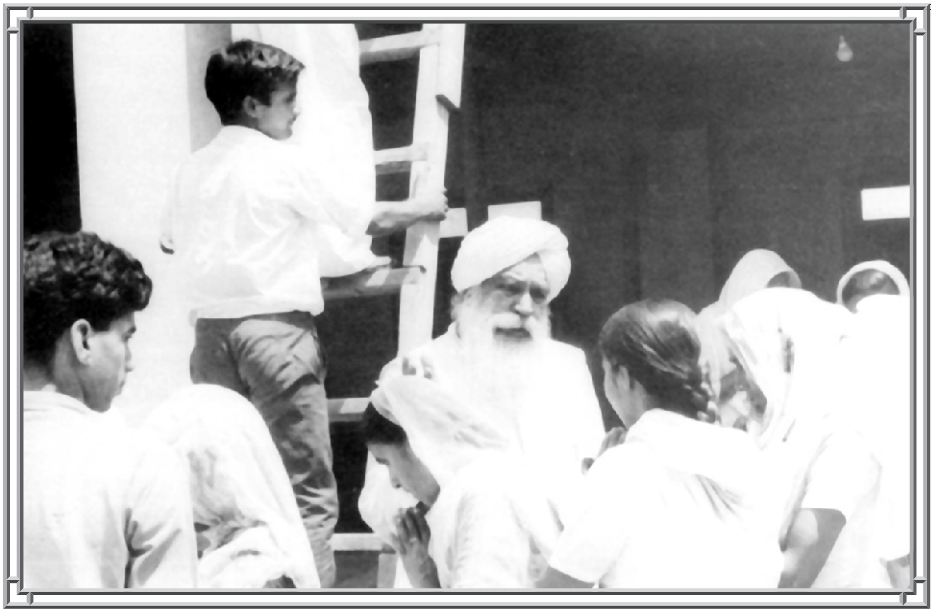

परमात्मा कहाँ हैं ? हजूर ने हँसकर कहा, ''तू मेरे कपड़े न फड़वा इन्हें थ्योरी समझा दे।''

उस समय महाराज जी के पुराने नामलेवा भी वहाँ मौजूद थे अगर वे भी यह समझते कि कृपाल ही भगवान है तो वे लोग भी यह कह सकते थे। जिसकी जैसी भावना होती है उस महान आत्मा को लोग उसी तरह देखते हैं, समझते हैं और उसी तरह उससे अपनी मुराद पूरी करवाते हैं।

एक बार महाराज जी हमारे इलाके में 'नामदान' दे रहे थे, पचास आदमियों में से काफी प्रेमियों को अच्छा अनुभव हुआ लेकिन एक आदमी को कोई अनुभव नहीं हुआ। उसने कहा कि मुझे ज्योत दिखाई नहीं दी और कोई अनुभव भी नहीं हुआ। उसकी बात सुनकर मेरे दिमाग में समस्या हुई कि ज्योत भगवान की है भगवान तो इसके सामने खड़ा है और यह कौन सी ज्योत देखना चाहता है? महाराज जी ने उसे दूसरी बैठक दी। आज वह पछताता है कि वह

उस समय किन ख्यालों में था। शुरू-शुरू में जब कोई प्रेमी ऐसा कहता तो मुझे बड़ी समस्या होती कि परमात्मा कृपाल ज्योत-रूप में सबके अंदर थे। उनके रोम-रोम में से किरणें निकलती थी फिर भी लोग ऐसा कहते थे कि हमें कोई अनुभव नहीं हुआ।

हमें हमारी भावना के मुताबिक ही नजर आता है। मैंने अपने गुरु के सामने खड़े होकर यह कहा, ''मैं किसी भगवान को नहीं मानता मैंने उसे नहीं देखा मैंने आपको देखा है। मेरे लिए आपसे बड़ा कोई भी नहीं है। आपने जो कुछ मुझे करने के लिए कहा मैंने वह कर लिया अगर हम गुरुमत को ऐसे पकड़ ले तो हम जल्दी तरक्की कर सकते हैं। सतगुरु ने अपने अंदर 'नाम' प्रकट किया होता है अगर हम ईमानदारी से उनकी शरण में रहें और जो कुछ वे कहते हैं उस पर अमल करें तो हमारा सब कुछ ही बन जाता है।''

सतगुरु हमें मन-इन्द्रियों से ऊपर उठने की सलाह देते हैं लेकिन हम वहीं फँसे रहते हैं। जिस तरह कोई कैदी सजा काटकर जाते समय जेलर से यह कहे कि मेरा चूल्हा चौंका ऐसे ही रखना मैं वापिस आऊँगा। वह जब आजाद हो जाए तो उसे पिछले सामान का ख्याल छोड़ देना चाहिए। वापिस अपने नगर में आकर एक नेक इंसान बनकर ईमानदारी से अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। सन्तमत सुधार का मत है। हमने सन्तमत में आकर अपना जीवन सुधारना है अगर हम अपनी बाहरी जिन्दगी अच्छी बना लेते हैं अंदर का मार्ग खुलना आसान हो जाता है।

***

धन्य अजायब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया–मेहर से मुम्बई में 4 जनवरी बुधवार से 8 जनवरी रविवार 2012 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

आप सबके चरणों में निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर सन्तवचनों से लाभ उठाकर अपना जीवन सफल बनाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन,
शान्तिलाल मोदी मार्ग (नज़दीक मयूर सिनेमा)
कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई – 400 067
फोन – 09 833 00 4000